प्राक्कथन

साहित्य को समाज का दर्पन माना जाता है। प्रेमचन्द तो साहित्य को समाज का दर्पण ही नहीं, दीपक मानते हैं। इसीलिए उन्होंने साहित्य में यथा और आदर्श के समावेश को अनिवार्य माना है। इसी परम्परा का निर्वहन करते हुए प्रेमचन्द ने अपने साहित्य में यथार्थवादी चित्रण को भी स्थान दिया है। प्रेमचन्द ने अपनी सभी कहानियों में मानव जीवन तथा उससे जुड़े विभिन्न पहलुओं का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत करके मानवता को एक नई दिशा प्रदान करने का कार्य किया है। इसीलिए प्रेमचन्द को सामाजिक सरोकार के लेखक माना गया है।

मैंने प्राथमिक कक्षाओं में प्रेमचन्द द्वारा लिखित पंच परमेश्वर तथा बड़े घर की बेटी कहानियां पढ़ी, तब से ही प्रेमचन्द साहित्य की ओर मेरी रूचि बढ़ती ही गई है। मैंने विद्यालय पास करने के पश्चात अनेकों बार इनका सम्पूर्ण साहित्य पढ़ा है। जब कभी इसे मैं पुनः पढ़ने की कोशिश करती हूं तो हर बार इसमें कोई न कोई नवीनता अवश्य मिल जाती है। अतः इनका साहित्य आज भी प्रासंगिक है। प्रेमचन्द का साहित्य मुझे अत्यन्त मनमोहक, मनोरजंक, राजीव, सरस तथा मार्मिक लगा। इन्होंने अपनी लेखनी कहानी, उपन्यास, नाटक, निबन्ध, पत्रकारिता तथा बाल साहित्य पर चलाई है। इनके साहित्य को ख्याति प्राप्त करवाने का श्रेय कहानियों को जाता है। इनकी सर्वश्रेष्ठ कहानियों में बड़े घर की बेटी, ठाकुर का कुआं, कफन, पंचपरमेश्वर, इत्यादि का नाम आता है। इसीलिए इन्हें निरांकोच कथा सम्राट के नाम से विभूषित किया गया है। वे ग्रामीण परिवेश से जुड़े होने के कारण उन्होंने देश तथा समाज की प्रत्येक समस्या को निजी मानकर उसका चित्रण किया है। उनके युग में देश परतन्त्रता की बेड़ियों में जकड़ा हुआ था। उन्होंने तत्कालीन परिस्थितियों ने भारतीयों की दयनीय अवस्था का चित्रण किया। प्रेमचन्द की हर समस्या से मैंने प्रेमचन्द के कहानी--साहित्य अपने अध्ययन का विषय बनाया।

प्रेमचन्द समाज सुधारक, सच्चे देश भक्त तथा भारतीय संस्कृति के अग्रदूत माने जाते हैं। नवजागरण की दृष्टि से इनके कथा--साहित्य पर शोध--कार्य नगण्य मात्र हुआ है। मैंने उनकी कहानियों को नवजागरण की नजर से देखने का यह एक प्रयास किया है। विषय चयन की दृष्टि से यह सुनिर्धारित भी है तथा यह विस्तृत भी है। इसके साथ--साथ अध्ययन की दृष्टि से यह

विषय बिल्कुल स्पष्ट भी है तथा सुनिश्चित भी। इसी कसौटी को ध्यान में रखते हुए मैंने **"भारतीय नवजागरण तथा कहानीकार प्रेमचन्द"** विषय चुना है। जो पी–एच॰ डी॰ स्तर के शोध–प्रबन्ध के लिए एक आदर्श विषय माना जा सकता है। इस विषय में विस्तृत क्षेत्र होने के कारण सूक्ष्म अध्ययन और पर्यालोचन के लिए पर्याप्त स्थान यहां रहा है। मैंने विषय के साथ पूर्ण रूपेण न्याय करने का भरसक प्रयास किया है। विषय के सम्यक विवेचन के लिए उसे छोटे–छोटे अध्यायों में वर्गीकृत करना भी आवश्यक है। इसीलिए प्रस्तुत शोध–प्रबन्ध को मैंने आठ अध्यायों में वर्गीकृत कर दिया है।

प्रथम अध्याय भूमिका का है, जिसमें विषय प्रवेश, शोध की सार्थकता को लिया गया है। कहानी के अर्थ, परिभाषा एवं स्वरूप विवेचन । इसमें भारतीय नवजागरण की धारणा और ऐतिहासिक संदर्भ को भी लिया गया है।

द्वितीय अध्याय में भारतीय नवजागरण की विकास–प्रक्रिया का विवेचन करते हुए उसके अर्थ व स्वरूप पर प्रकाश ड़ाला है। भारतीय नवजागरण की विकास–प्रक्रिया में मैंने , अंग्रेजी शिक्षा की नीति, सामाजिक जागरण, राजनीतिक जागरण, धार्मिक जागरण, आर्थिक जागरण को भी लिया है।

तृतीय अध्याय में भारतीय नवजागरण के प्रमुख सुधारात्मक आन्दोलनों–ब्रह्म समाज, प्रार्थना समाज, आर्य समाज, थियोसोफिकल सोसायटी, रामकृष्ण मिशन के विषय में सविस्तार वर्णन किया है।

चतुर्थ अध्याय में प्रेमचन्द के जीवन परिचय को लिया है उनके बाह्य व्यक्तित्व, आन्तरिक व्यक्तित्व के साथ–साथ कृतित्व को भी स्थान दिया गया है।

पंचम अध्याय में प्रेमचन्द की कहानियों में भारतीय नवजागरण की सकारात्मक अभिव्यक्ति के अर्थ स्वरूप पर प्रकाश डालते हुए बाल–विवाह निषेध, अनमेल विवाह निषेध, बहु–विवाह निषेध, दहेज–प्रथा की आलोचना, रिश्वत–खोरी की आलोचना, धार्मिक पाखण्डों की आलोचना, जातिगत भेदभावों की आलोचना, शराब इत्यादि, दुर्व्यसनों की आलोचना और पर्दा–प्रथा की आलोचना नामक बिन्दुओं के माध्यम से विषय को आगे बढ़ाया गया है।

षष्ठ अध्याय में नवजागरण की सकारात्मक अभिव्यक्ति के अर्थ व स्वरूप के अन्तर्गत पुनरूत्थान वादी रूप में वेश्या–उद्धार तथा अछुतोद्धार, मातृ–भूमि के प्रति प्रेम, स्वतन्त्रता की

भावना में स्वराज्य की भावना, सत्याग्रह की भावना, असहयोग आन्दोलन की भावना, विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार, नारी के विविध रूप में, नारी पतिव्रता के रूप में, सुशिक्षिता, नारी एक प्रेरक के रूप में, विधवा–विवाह का समर्थन, अन्तरजातीय–विवाह का समर्थन, मानवतावाद इत्यादि केन्द्र –बिन्दुओं की सहायता से विषय को पूर्णता की ओर बढ़ाया जा सका है।

सप्तम अध्याय आर्थिक शोषण जिसमें जमींदार वर्ग द्वारा शोषण, जमींदार के सहायकों के द्वारा शोषण, कुटीर उद्योगों का ठप्प होना, सरकार द्वारा शोषण, शोषक वर्ग द्वारा गरीबों का शोषण, महाजन द्वारा शोषण, आपसी ईर्ष्या–द्वेष तथा प्राकृतिक आपदाएं केन्द्र बिन्दुओं की सहायता से शोध को पूर्णता की ओर बढ़ाया जा सकता है।

अन्तिम व अष्टम अध्याय में उपसंहार को लिया गया है तथा इसमें समस्त अध्ययन का निष्कर्ष प्रस्तुत किया गया है।

शोध प्रबंध के संबंध में सबसे पहले विषय–निरूपण की दृष्टि से 'भारतीय नवजागरण' से सम्बन्धित सैद्धान्तिक सामग्री का संकलन किया गया है, उसी के संबंध में व्यवहारिक आधार पर प्रेमचन्द के साहित्य के अध्ययन के साथ–साथ 'भारतीय नवजागरण के विभिन्न पक्षों को उजागर करने वाली सामग्री का चयन भी किया गया उसे विभिन्न अध्यायों के अनुरूप वर्गीकृत किया गया। प्रस्तुत शोध–प्रबन्ध में सैद्धान्तिक और व्यवहारिक सामंजस्य प्राप्त होता है। संदर्भोल्लेख की वैज्ञानिक पद्धति का आद्योपान्त निर्वाह करने का पूरा–पूरा प्रयत्न इस शोध–प्रबंध के अन्त में किया गया है।

प्रस्तुत शोध–प्रबंध की अधिकांश उपलब्धियों का श्रेय परम् आदरणीय श्रद्धेय गुरूवर डॉ॰ राजेन्द्र सिंह रीडर, हिन्दी–विभाग के निर्देशन को ही जाता है क्योंकि वे नैतिकता और करूणा की साक्षात् मूर्ति हैं। उनकी प्रेरणा, स्नेह, स्निग्ध–वाणी तथा आत्मीयतापूर्ण व्यवहार ने ही मुझे इस कार्य को सम्पन्न करने योग्य बनाया है। उनके व्यक्तित्व की प्रेरणा से प्रेरित होकर मुझे उपयुक्त विषय–चयन की दिशा मिली। उन्हीं के आशीर्वाद के फलस्वरूप आज यह कार्य पूर्ण हुआ है। उन्होंने मेरी निराशाओं को आशाओं में बदलकर अपनी गुरु कृपा और आशीर्वाद से सनाथ कर दिया। उन्ही के आशीर्वाद के फलस्वरूप मैं अपने पथ पर अग्रसर हो सकी इसलिए मैं अपनी हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करते हुए उनके प्रति नतमस्तक हूं।

मैं अपने विभागाध्यक्ष डॉ॰ परेश मिश्र, प्रोफेसर हिन्दी–विभाग के प्रति अपना आभार

प्रकट करती हूं , जिन्होंने विषय चयन से लेकर शोध–प्रबंध में आने वाली कठिनाइयों का समाधान प्रस्तुत किया। इसके अतिरिक्त अन्य गुरूजनों डॉ॰ बैजनाथ सिंहल , प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, डॉ॰ (श्रीमती) विद्या सिवाच, रीडर हिन्दी विभाग, डॉ॰ रोहिणी अग्रवाल व डॉ॰ रामसजन पाण्डेय का आभार प्रकट करती हूं। यह मेरा परम धर्म है क्योंकि ये मुझे प्रेरित व प्रोत्साहित करते रहे।

अन्त में अपने पूज्य पिता श्री धूपसिंह जी व स्वर्गीय माता श्रीमती प्रसन्न देवी जी का आभार प्रकट करना कर्त्तव्य समझती हूँ जिन्होंने मुझे इस पुनीत कार्य के लिए सदैव प्रोत्साहित व प्रेरित किया। उसके पश्चात मैं अपने सहचर श्री महेन्द्र सिंह जी फौगाट का आभार प्रकट करती हूँ। जिन्होंने मुझे केवल प्रोत्साहित ही नहीं किया अपितु सम्पूर्ण सुविधाएं भी उपलब्ध करवाई तथा प्रत्यक्ष तथा परोक्ष रूप से मुझे सम्पूर्ण सहयोग दिया। परम स्नेही भाई तथा बहनों के प्रति हार्दिक आभार प्रकट करती हूँ क्योंकि वे सदैव मुझे प्रेरित करते रहे तथा मेरा मनोबल बढ़ाते रहे। जिसके फलस्वरूप मुझे अपना शोध कार्य पूर्ण करने का धैर्य और साहस प्राप्त हुआ। प्रिय आत्मज वरूण तथा विजयन्त के प्रति स्नेह प्रकट करती हूँ क्योंकि मुझे मेरे कार्य को सम्पन्न करने के लिए निरन्तर उत्साहित किया गया है। उन ग्रन्थकारों के प्रति भी मैं अपना आभार प्रकट करना कर्तव्य समझती हूँ, जिनकी अमूल्य कृतियों से मैंने प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से सहायता प्राप्त की है।

प्रस्तुत शोध–प्रबंध की तमाम उपलब्धियां गुरूजनों के परामर्श एवं प्रोत्साहन का परिणाम है और त्रुटियां मेरी अनुभवहीनता व अल्पबुद्धि का परिणाम है। अन्त में मैं महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक के पुस्तकालय के समस्त स्टाफ व अधिकारियों का भी धन्यवाद करती हूं, जिन्होंने समय–समय पर मुझे शोध–प्रबंध से संबन्धित पुस्तकें उपलब्ध करवा कर मेरी सहायता की । सबसे अन्त में श्रीमती वीरमती देवी का आभार प्रकट करती हूँ, जिन्होंने अल्प समय में अपनी कड़ी मेहनत की सहायता से कम्प्यूटर द्वारा टंकण कार्य करके शोध प्रबंध को अंजाम तक पहुँचाया।

शोध–प्रबंध में त्रुटि परिमार्जन के काफी प्रयासों के बावजूद भी यदि कोई त्रुटि रह गई हो तो उसके विद्वज्जन मुझे क्षमा करने का कष्ट करें।

शोधकर्त्री

राजकुमारी

राजकुमारी 23.04.03